International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2018; 4(1): 08-11
© 2018 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 04-11-2017
Accepted: 05-12-2017

Dr. Rajesh Sharma
Assistant Professor in Sanskrit,
Higher Education Department
J & K, Jammu, India

Correspondence
Dr. Rajesh Sharma
Assistant Professor in Sanskrit,
Higher Education Department
J & K, Jammu, India

सृष्टि की आत्मा है सूर्य

Dr. Rajesh Sharma

प्रस्तावना

प्राकृतिक शक्तियों में से कदाचित किसी अन्य शक्ति ने मानव जीवन को उतना प्रभावित न किया हो, जितना, सूर्य ने। प्रकाश एवं अग्नि के साक्षात रूप, सूर्य के उदय के साथ जहाँ समस्त जीवन जगत क्रियाशील एवं प्रकाशमान होता है, वहीं उनके अस्त होने पर निष्क्रिय निद्रा की ओर अग्रसर। सूर्य के नित्यप्रति उगने को सृष्टि की निरंतरता को द्योतक माना गया। यह कहने के कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि मनुष्य के दैनिक जीवन को प्रभावित करने वाली घटनाएँ सूर्य द्वारा ही निर्धारित होती हैं, जैसे दिन–रात एवं ऋतुओं का होना।

भगवान सूर्य आदिदेव हैं, क्योंकि इनकी उपासना अनादिकाल से प्रचलित है। भगवान सूर्य ही समय–नियन्ता और समय–विभाजक हैं, क्योंकि सूर्य से ही दिन, रात, तिथि, पक्ष, मास, ऋतु, अयन, संवत्सर, युग, मन्वन्तर और कल्प आदि के समय का ज्ञान होता है। भगवान सूर्य ही सबसे श्रेष्ठ और अधिक उपकारक हैं, क्योंकि ये समस्त संसार को उष्णत आदि प्रदान करते हैं, जिससे मुनष्य पशु–पक्षी और पेड़–पौधे वनस्पति आदि सभी जीवन शक्ति प्राप्त कर बलिष्ठ एवं सुरक्षित रहते हैं तथा 'साक्षात देवो दिवाकरः' की मान्यतानुसार तो भगवान सूर्य ही प्रत्यक्ष देवता हैं, क्योंकि ये प्रतिदिन प्रातःकाल में उदित और सायंकाल में अस्त होकर संसारर के समक्ष अपने देवत्व को प्रत्यक्ष प्रकट करते हैं। इसलिए भगवान् सूर्य को समस्त प्राणियों का जीवन कहा गया है।

सूर्य की महिमा को भारतीय संस्कृति में अनेक प्रकार से प्रतिपादित किया गया है।

वैदिक काल में सूर्य की जीवनदायिनी शक्तियों का अभिज्ञान कर उन्हें देवता माना गया है। उन्हें प्रसन्न करने के लिए वेदों में अनेक मंत्रों की रचना की गयी। मन्त्रों में श्रेष्ठतम, गायत्री मन्त्र उन्हीं को समर्पित है।

ओम् भुर्भुवः स्वः तत्सवितुरवरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोद्यात
(गायत्री मन्त्र)

ऋग्वेद, अर्थववेद एवं महाभारत में जहाँ सूर्य को समस्त जीवों की आत्मा माना गया वहीं गीता में उन्हें परम ब्रह्म की आँखें कहा गया।

अनादिमध्यान्तमन्तवीर्यअनन्तबाहुँ राशि सूर्य नेत्रम् । [2]

रवि, भास्कर, मार्तण्ड सहित उनके कई नाम प्रचलित हुए एवं उनकी स्तुति में सूर्यसहस्रनाम की रचना की गई। विद्वानों के अनुसार मुगल सम्राट अकबर भी सूर्यसहस्रनाम का जाप करते थे।रामायण में भी महिमा का उल्लेख है। महर्षि अगस्त्य श्री राम को आदित्यह्रदयम् नामक मन्त्र द्वारा सूर्य की आराधना के लिए प्रेरित करते हैं। सूर्य को वर्षा का कारक भी बताया गया है।

'आदित्यात् जायते वृष्टिः'
(रामायण)

सूर्य को त्रिदेव का अवतार भी माना जाता है। प्रातः से मध्याह्न तक वे ब्रह्मा, अपराह्न में शिव एवं सायंकाल में विष्णु का रूप धारण करते हैं।अनेक देवताओं में सूर्य ही एक ऐसे देव हैं जिनका दर्शन मनुष्य प्रतिदिन साक्षात रूप में करता है। अतएव सूर्योपासना के विविध रूप हमें भारतीय समाज के दैनिक जीवन में भी परिलिक्षित होते हैं। उषाकाल में योगासनों के अभ्यास् से तन एवं मन स्वस्थ होता हैं, ऐसी मान्यता तो सदियों से रही है, पर उल्लेखनीय यह है कि आसनों के एक समूह का 'सूर्यनमस्कार' के रूप में प्रचलन हुआ। दक्षिण भारत में स्त्रियां एवं कन्याएँ हर सुबह सूर्य का स्वागत, घर के सामने रंगोली बनाकर करती हैं। इन रंगोलियों द्वारा सूर्य को प्रसन्न कर उनसे घर में ऊर्जा एवं निरोग्य प्रदान करने की प्रार्थना की जाती है।

सर्योपासना का एक प्रतिफल यह हुआ कि भारतीय समाज में सूर्य के मूर्त स्वरूप की कल्पना की गयी जो उनके दृष्टिगोचर स्वरूप से सर्वथा भिन्न है। इन मूर्तियों की उपासना के लिए कई भव्य मंदिर भी निर्मित किए गये। यद्यपि ये मंदिर वर्तमान में पूर्ण रूप से सुरक्षित नहीं हैं तथापि, भारतवर्ष में सूर्योपासना से जुड़े हुए वास्तुकला एवं शिल्पकला के जीवन्त उदाहरण हैं। इन कलाओं की विशेषताओं को समझने के क्रम में उत्तर भारत में मार्तण्ड (जम्मू एवं कश्मीर), पश्चिमी भारत के मोधेरा (गुजरात) एवं पूर्वी भारत के कोणार्क (उड़ीसा) में मंदिर है।

मार्तण्ड का सूर्यमंदिर, श्रीनगर के दक्षिण–पूर्व में माटन नामक स्थान पर एक ऊँचे पठार पर एक रमणीय परिसर में निर्मित है। कवि कल्हण की राजतरंगिणी में मार्तण्ड मंदिर के उल्लेख से यह ज्ञात होता है कि इसका निर्माण कश्मीर के प्रसिद्ध नृप ललितादित्य मुक्तापीड ने सातवीं–आठवीं शताब्दी में करवाया था। उल्लेखें से यह भी पता चलता है कि गर्भगृह में स्थापित सूर्य की प्रतिमा पहले ताम्र तदुपरांत स्वर्ण की बनी थी। मार्तण्ड मन्दिर का वर्णन अबुल फजल रचित आईने–अकबरी एवं नीलमाता पुराण में भी मिलता है।मंदिरों के गर्भगृह में अब कोई प्रतिमा नहीं हैं पर सौभाग्य से मंदिर की दीवारों पर उत्कीर्ण अनेक मूर्तियों में सूर्य की भी एक प्रतिमा सुरक्षित है। यह चतुर्भुज मूर्ति कई विशेषताओं को दर्शाती है, जैसे पैरों में लंबे जूत, सिर पर मुकुट, हाथों में खिले हुए पदम् पुष्प, कानों में कर्णफूल इत्यादि। उल्लेखनीय है कि सूर्य को एक अश्व पर सवार दिखाया गया है जो प्रचलित अंकनों से भिन्न है।

मोघेरा का सूर्यामंदिर, अहमदाबाद से 105 कि० मी० उत्तर–पश्चिम में स्थित है। इस मंदिर का निर्माण सोलंकी वंश के राजा भीमदेव प्रथम ने 1026 ई० में करवाया था। मंदिर का गर्भगृह पूर्वाभिमुख है एवं इस प्रकार से निर्मित है कि विषुवीय दिवसों यानि 21 मार्च एवं 23 सितम्बर को सूर्य की प्रथम किरणें, गर्भगृह में स्थापित सूर्यमर्ति को आलोकित करती थीं। गर्भगृह की मूर्ति, दुर्भाग्य से अनुपलब्ध है पर मंदिर की बाह्य दीवारों पर सूर्य की अनेक मनोहारी मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। इन सभी मूर्तियों में सूर्य को सात घोड़ो के रथ पर आरूढ़ दिखाया गया है।

भुवेनश्वर से पचपन कि० मी० की दूरी पर कोणार्क का विशाल मंदिर परिसर स्थित है। सूर्य के बृहदरथ के रूप में आयोजित इस मंदिर में शिल्पकला एवं वास्तुकला की पराकाष्ठा देखने को मिलती है। नरसिंहदेव द्वारा निर्मित इस मंदिर (रथ) में बारह विशाल चक्र एवं सात अश्व निर्मित हैं जो क्रमशः वर्ष के द्वादश माह एवं सप्त किरणों के प्रतीक हैं। कोणार्क के मंदिरों में सूर्य प्रतिमाओं के अनेक रूप देखने को मिलते हैं। इनमें से एक प्रतिमा के मुख पर अद्भुत मुस्कान देखी जा सकती है। राष्ट्रीय संग्रहालय में स्थापित यह प्रतिमा निःसंदेह शिल्पकला के उत्कृष्टतम उदाहरणों में से है।

ऐसी मान्यता है कि सूर्य के चरणों की कल्पना नहीं करनी चाहिए। उल्लेखनीय है कि सूर्य के प्रारम्भिक चित्रांकनों जैसे भज की गुफाओं (पुणे, महाराष्ट्र) एवं खण्डगिरि (उड़ीसा) में, उन्हें इस तरह प्रस्तुत किया गया है उनके पैर रथ के पीछे छुपे रहें। कुषाण काल के प्रभाव के उपरान्त उन्हें लम्बे जूतों से सुसज्जित दिखाया गया। मार्तण्ड, मोधेरा एवं कोणार्क, सभी मंदिरों में ऐसी ही मर्तियाँ दुष्टिगोचर होती हैं।

सूर्य को सदैव अश्व या अश्वों से जुते हुए रथ पर सवार दिखाया जाता है। सात अश्वों का रथ, जिसके उदाहरण मोधेरा एवं कोणार्क में मिलते हैं, सबसे ज्यादा प्रचलित हैं। भज की गुफाओं में सूर्य को उषा एवं प्रत्यूषा के साथ चार अश्वों वाले रथ पर सवार दिखाया गया है। उल्लेखनीयय है कि मार्तण्ड एवं कोणार्क में उन्हें बना रथ के, एक अश्व पर सवार दिखाया गया है।

सूर्य रथ का संचालन अरुण करते हैं जो गरुड़ के भ्राता हैं। खड्गधारी दण्डिन जो अंधकार से निरन्तर युद्धरत रहते हैं। एवं कलम–दवात धारी पिंगल सूर्य के सहचर के रूप में उत्कीर्ण किये जाते हैं। सामान्यतया रथ एक चक्रीय होता है। यह चक्र सूर्य की निरंतर गतिशीलता का द्योतक है एवं कई विद्वानों के अनुसार बौद्ध धर्म के प्रारम्भिक समय में बुद्ध के निरूपण के लिए प्रयुक्त हुआ। उत्तर भारत में सरल लोकगीतों द्वारा सूर्य की आराधना की जाती है।

आज का मानव भौतिक आध्यात्मिक एवं सामाजिक तीनों विधाओं में पारंगत होना चाहता है और नित्यप्रति अपना उत्कर्ष चाहता है। एतदर्थ वह सभी संसाधनों की शाखा में जाकर अपना हित साधन करने की मंसा रखता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार सूर्य एक ऐसा ग्रह है, जो शुभग्रह होने की स्थिति में मानव को जहाँ नीरोग रखता है, वही उसको चतुर्दिर्श यशार्जन भी कराता है, लेकिन पापग्रह की स्थिति में सूर्य जातक को रक्त से सम्बन्धित विविध रोगों को देने के साथ–साथ अपयश का भागी भी बनाता है। शायद इसीलिए प्रातःकालीन सवितृदेव अर्थात् सूर्य को अर्ध्य देने का विधान प्रायः सभी भारतीय जन अपनी दिनचर्या में रखते हैं, साथ ही नीरोगी बनने के लिए आदित्य स्तोत्र का पारायण करने की सलाह ज्योतिर्विद् सामान्य मानव को देते हैं, उसी प्रकार सूर्य के बिना इस सौर जगत् की सृष्टि सम्भव नहीं है, क्योंकि सूर्योदय के साथ ही इस जगत् में जन–जीवन का कार्य प्रारम्भ होता है और प्राणियों को अपने दैनिक कार्यों में प्रवृत्त होने की स्वतः प्रेरणा मिलती है, अतः सूर्य को चल और अचल, जड़ और चेतन दोनों प्रकार से 'सृष्टि की आत्मा' कहा गया है।[3] सूर्य का विवरण वेदों, उपनिषदों, महाभारत एवं पुराणों मे विशद् रूप से देखने को मिलता है।

ऋग्वेद के विवरणानुसार ब्रह्मा या ईश्वर ने पूर्व कल्पों की भाँति–सूर्य–चन्द्रमा–तारे–पृथ्वी–अन्तीरक्ष तथा उनमें स्थिति आकाशीय पिण्डों की रचना की है, यथा :

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत्।
दिवचं पृथ्वी चान्तरिक्षमथोस्वः।।

यजुर्वेद में तो भगवान् की उपमा सूर्य से दी गई है।[4] भारतीय पौराणिक शास्त्र में जगत् की उत्पत्ति ओर प्रलय में सूर्य को ही कारण माना गया है जैसा कि सूर्यपुराण में वर्णन मिलता हैः

'सूर्यात् प्रसूयते सर्वं तत्र चैव प्रलीयते'

ब्रह्मपुराण में विवरण मिलता है कि चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को अश्विनी नक्षत्र एवं मेष राशि में सूर्योदाय काल मे सृष्टि की रचा हुई। यथा :

चैत्रमासे, जगद् ब्रह्मा ससर्वा प्रथ्मोऽवानि।
शुक्लपक्षे समग्रं तत् तदा सूर्योदय सति।।

श्रीमद्भागवत में वर्णन मिलता है कि सूर्य के द्वारा ही दिशा, आकाश, द्युलोक, भूर्लोक, स्वर्ग–नरक और रसातल तथा अन्य समस्त स्थानों का विभाग होता है तथा सूर्य भगवान् ही देवता, तिर्यक, मनुष्य सरीसृप और समस्त जीव समूहों के आत्मा एवं नेत्रेन्द्रिय के अधिष्ठता हैं।

महाभारत में भगवान् सूर्य का स्तवन करते हुए महाराज युधिष्ठिर कहते हैं कि ''हे सूर्यदेव! आप सम्पूर्ण जगत् के नेत्र तथा समस्त प्राणियों की आत्मा है।''

महाकवि कालिदास ने रघुवंश मे 'सूर्येतपत्या वर्णायदृष्टे कल्पेत् लोकस्य कथं तमिस्रा' रूप में सूर्य की महनीयता का विवरण समुपलब्ध किया है, तो दूसरी ओर मयूर कवि ने अपने शरीर में कोढ़ को दूर करने के लिए 'सूर्यशतक' लिख डाला।

सूर्योपनिषद् में तो सूर्य को ब्रह्म और रुद्र का रूप माना गया है।[5] प्राचीन ज्योतिषाचार्यों ने ग्रहों की संख्या 9 बताई है।[6] सूर्य को भानु, आदित्य, रवि, प्रभाकर, दिनेश, तमोहन्ता, दिनकर्ता, दिवामणि, हेलि, तपन, पूषा, अर्क, अंशुमान, अरुण और चण्डाशुं भी कहा जाता है।[7] नवग्रहों में सूर्य को सर्वोच्च पद प्राप्त है, अतः उसे सब ग्रहों का राजा कहा गया है। पृथ्वी सहित अन्य सभी ग्रह, तारे, नक्षत्र आदि सूर्या की परिक्रमा करते हैं।[8] यह पूर्व दिशा में उदय होकर पश्चिम दिशा में अस्त होता है। आधुनिक खगोलशास्त्रियों के मतानुसार सूर्य का अधिकांश भाग हाइड्रोजन गैस से निर्मित है। इसका तापमान एक लाख डिग्री फॉरेनहाइट माना जाता है। पृथ्वी से सूर्य की दूरी लगभग सवा करोड़ मील (13,000,000) मतान्तर से 9,59,00,000 मील मानी जाती है। सम्पूर्ण आकाशीय राशिचक्र के परिभ्रमण में सूर्य को लगभग 365 दिन और 6 घण्टे का समय लगता है। इसकी किरणें पृथ्वी पर 20 मिनट में पहुँचती हैं और यह पूर्व दिशा का स्वामी है तथा एक राशि पर एक मास तक परिभ्रमण करता है।[9] ताँबा, सोना, पिता, शुभ, फल, धैर्य, शौर्य, युद्ध में विजय, आत्मा, सुख, प्रताप आदि का विचार सूर्य से किया जाता है अर्थात् सूर्य उपर्युक्त का कारक है।[10]

भगवान् सूर्य आरोग्य के अधिष्ठित देवता है। मत्स्यपुराण में विवरण मिलता है। कि आरोग्य की कामना भगवान् सूर्य से करनी चाहिए[11], क्योंकि इनकी उपासना करने से मनुष्य नीरोगी रहता है। सूर्य की किरणों में मनुष्य के लिए उपयोगी सभी तत्त्व विद्यमान हैं। सब रोगों को दूर करने की शक्ति सूर्य में है तभी तो इसे 'विष्वानिदेव सवितर्दुरितानि परासुव' कहा गया है। ऋग्वेद में विवरण प्राप्त होता है कि सूर्य का प्रकाश पीलिया तथ हृदयरोग में विशेष लाभप्रद माना गया है।[12] रामचरितमानस में भी वर्णन मिलता है कि आँखों को सम्पूर्ण रोग सूर्य की उपासना से ठीक हो जाते है,[13] क्योंकि वेद के कथनानुसार परमात्मा की आँखों से सूर्य की उत्पत्ति मानी जाती है, यथा 'चक्षोः सूर्योऽजायत्'। सूर्य स्वयंभू हैं, इस सौर जगत् में श्रेष्ठ हैं, सारे जगत् को प्रकाशित कर रहे हैं।[14] सूर्य की ऊष्मा के बिना वनस्पतियाँ पक नहीं सकतीं, अन्न उत्पन्न नहीं हो सकता अर्थात् भगवान् सूर्य सब प्रकार के अन्न और वनस्पतियाँ पक नहीं सकतीं, अन्न उत्पन्न नहीं हो सकता अर्थात् भगवान् सूर्य सब प्रकार के अन्न और वनस्पतियों को पकाते हैं[15] तथा उनको जीवनी शक्ति प्रदान करते हैं।[16]

ज्योतिषीय दृष्टि से देखने पर ज्ञात होता है कि जन्मकुण्डली में भी सूर्य को आत्मस्थानीय माना गया है, जैसे शरीर बिना आत्मा के जड़वत होता है, वैस ही जन्मकुण्डली में सूर्य की स्थिति होती है। सूर्य एक महनीय ग्रह है जो संसार के मूल में अपनी प्रभावी भूमिका निभाता है शायद इसीलिए काल को भी सूर्य के कारण परिवर्तित होना पड़ता है। 'चक्रवत् परिवर्तते कालः सूर्य वषात्' एवं 'सरति आकाषे सूर्यः कर्मणि लोकं प्ररेयति' इस तथ्य से भी हम यह मान सकते हैं कि सूर्य सम्पूर्ण संसार को प्ररेणा देने वाला ग्रह है। ज्योतिर्विदों की मान्यतानुसार सूर्य के शानि, शुक्र, राहु और केतु शत्रु हैं, बुध सम और चन्द्रमा, मंगल, गुरु मित्र हैं।[17] जन्म कुण्डली में अवस्थित सूर्य ग्रह अपनी उच्च एवं नीच प्रकृति के कारण जातक के लिए शुभ एवं अशुभ भी हुआ करता है। जैसे मेष राशि का सूर्य 10 अंश तक उच्च और तुला राशि का सूर्य 10 अंश तक नीच का कहलाता है। सूर्य सिंह राशि का स्वगृही माना गया है।[18] सूर्य अपनी राशि स्थान से तृतीय, दशम स्थानों को 1 चरण से, पंचम–नवम का 2 चरण से चतुर्थ, अष्टम स्थानों को 3 चरण से और सप्तम को पूर्ण दृष्टि से देखता है।[19] सारावली में विवरण मिलता है कि सूर्य के उदय होने से संसार की रचना हुई एव सूर्यादि ग्रहों के राशिचक्र के भ्रमण के आधार पर बारह राशियों की मीमांसा लोकव्यवहार में आयीं।[20] तथा इन राशियां के आधार पर जन्म कुण्डली में बारह भावों की व्युत्पति भी हुई, अतः द्वादशभावों में अवस्थित सूर्य, उच्च–नीच प्रवृत्ति के कारण फल का ज्ञाता होता है, कहीं वह जीवनदाता या भाग्यकारक है, तो कहीं रोगों का आघायक एवं क्रोध के आगार का कारण भी बनता है, परन्तु जन्म कुण्डली में अवस्थित सूर्य के साथ जब एक से अधिक ग्रहों की युति होती है, तो उसके विविध परिणाम दैवज्ञ लोकग्रहों की युति के अनुसार निर्धारित करते दिखते हैं। जिसमें विशेषतया सूर्य, गुरु और बुध की युति है की जातक के लिए हितकारी एवं लाभदायक सिद्ध होती है।[21] सुगम ज्योतिषकार का मत है कि जन्मकुण्डली में यदि उच्च, मित्र एवं स्वगृही सूर्य के साथ चन्द्रमा, मंगल, बुध गुरु, शुक्र और शानि की युति हो, तो जातक सूर्य के समान तेजस्वी, राजाओं द्वारा सम्मानित, धनी, दानी और शिव भक्त होता है।[22]

इसी प्रकार जन्मकुण्डली में स्थित सूर्य की विशोत्तरी दशा एवं अन्तर्दशा भी जातक पर अपना असीम प्रभाव छोड़ती है। मानसागरी में वर्णन मिलता है कि कलियुग में नक्षत्र (विशोत्तरी) दशा ही फलप्रद होती है, अतः सूर्य की महादशा में यदि स्वगृही, मित्रराशिस्थ ग्रह शुभ या उच्च के हों, तो जातक के लिए शुभुलदायक होते हैं। ज्योतिषास्त्र में सूर्य ग्रह की अनिष्ट शांति हेतु अनेक प्रकार के उपाय बताए गए हैं यथा; सुनिश्चित संख्या में मंत्रजप, यथा समार्थ्य दान, हवन, जड़ी–बूटी धारण औषधि–स्नान, व्रत, जप–तप, करना इत्यादि, अतः प्रसिद्ध दैवज्ञों के परामर्श से सूर्य के अशुभ प्रभाव से बचने के लिए रविवार के दिन उपवास करना, सूर्य के मंत्र और आदित्य स्तोत्र का पााारायण, सूर्यपूजन एवं माणिक्य रत्न धारण आदि विधियों को अपनाना चाहिए। सूर्य को जलदान अर्थात् सूर्यार्घ्य, रक्त चंदन, रक्त पुष्प के साथ रक्तपात्र के देना चाहिए।

ओम् घृणिः सूर्याय नमः।
अथवा
ओम् एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशेजगत्पते,
अनुकम्पय माम् भक्त्या गृहाणार्घ्य दिवाकरः।

अतएव आज भी मानव को चाहिए कि वह अपनी दैनन्दिनी में सूर्य की उपासना एवं पूजा को स्थान दें, वास्तव में जिस रूप में गायत्री जप विधान से मानवीय बुद्धि संतुलित होती है, उसी तरह सूर्य की उपासना, सूर्य से सम्बन्धित मंत्रों का जप, रविवार को उपवास एवं नमक का वर्जन, माणिक्य धारण आदि ऐसे विधान हैं, जिन्हें अपना

कर एवं प्रातःकाल सूर्यार्घ्य देकर मानव सूर्य से प्राप्त कष्टों से, बहुत सीमा तक छुटकारा पा सकता है। यदि सूर्य पापग्रही बन गया है, तो और यदि शुभग्रही सूर्य हैं, तो उपर्युक्त विधाओं से मानव उस भाव विशेष को बली बनाकर सद्यः उत्कर्ष एवं यशाप्राप्ति कर पाने में समर्थ हो सकता है।

पाद टिपण्णी

1. जीवनं सर्वभूतानम्।– ब्रह्मपुराण 33/9.
2. श्रीमद्भाग्वदगीता
3. सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च चक्षुः मित्रस्य वरुणस्य अग्रेः। ऋग्वेद 10/115/01
4. ब्रह्म सूर्यसंस ज्योतिः। – यजुर्वेद 23/48
5. एषा ब्रह्मा च विष्णुश्च रुद्र एष हि भास्करः। सूर्योपनिषद् 55
6. सूर्यः सोमो महीपुत्रों बृहस्पतिः। शुक्रः शनैश्चरों राहु केतुश्चैते, ग्रहाः स्मृताः।। 'ज्योतिष तत्त्व पृ० 98
7. सूर्यो हेलिर्भानुस्तथादिव्योरविप्रभाकरस्तथा। दीनशस्तमोहन्ता च दिनकर्ता दिवामणिः।। होरा रत्न, पृ० 52
8. बृहत्जातकम् पृ० 32 से उद्धृत
9. रत्न ज्योतिष विज्ञान, पृ० 59
10. ताम्रं स्वर्ण पितृशुभफलं चात्मसौख्यप्रतापं। धैर्य शौग्रं समितिविजयंराजसेवाप्रकाशम्।– फलदीपिका 2/1
11. मत्स्य पुराण पृ० 328
12. उद्यन्नद्य मित्रमह आरोहन्नुत्तरां दिवम्। हृदयरोगं मम सूर्य हरिमाण च नाशय।। – ऋग्वेद 01/05/11
13. नयन दिवाकर कच कच धन माला। रामचरितमानस 6/15/3
14. स्वयंभूरसिश्रेष्ठो रश्मिर्वचोदा असि वर्चो में दहि– यजुर्वेद 2/26
15. स औषधीः पचति विश्वरूपः। – ऋग्वेद 10/88/10
16. – ऋग्वेद 8/47/4
17. सुहृदोऽर्केन्दुभौमेज्याज्ञशुक्रशनिराहवः अन्योन्यं बैरिणेह्यन्ये। शत्रु मन्दसितौसमश्च शशिजो मित्राणि शैशरवे।। – सुगम ज्योतिष पृ० 121.
18. सारावाली 3/35, 36, जातकालंकार पृ० 9.
19. पूर्ण पश्यति रविजस्तृतीयदशम्–सारावली 4/32, 33.
20. व्यसृज्जगत्समस्तं ग्रहर्क्षसंघातकल्पितावगहतम्। द्वादशभेदैश्चित्रः कालः संप्रस्तुतस्तस्मात्।। – सारावली 3/2
21. महाधनी, शास्त्रशस्त्रकलाभिज्ञो लिपिकर्ताभवेत – मानसागरी पृ० 121.
22. दिवाकनभिं तेजो भूपमान्यः शिवप्रियं सूर्याद्यैः शनिपर्यनतैर्योगे दानी धनान्वितः।। – सुगम ज्योतिष पृ० 418.